लघु रत्नत्रय विधान

देव

कल्पतरु श्री शान्तिनाथ भगवान

(आ.श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव के संघ चैत्यालय में विराजमान)

गुरु

शास्त्र

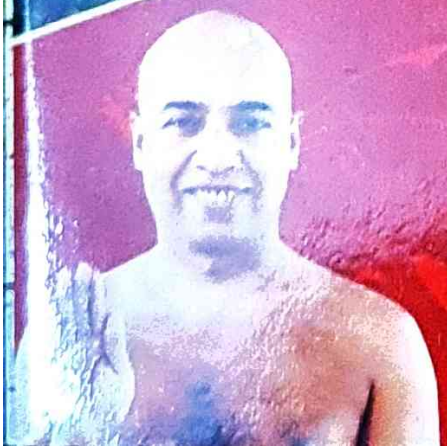

रचियता

आचार्य गुप्तिनंदी

लघु रत्नत्रय विधान माण्डला

श्री रत्नत्रय व्रत कथा

भाषानुवाद : गणिनी आ.राजश्री माताजी

दोहा- रत्नत्रय परमार्थ है, करे सिद्ध सर्वार्थ।
इसका सम्यक् व्रत करो, बनो भव्य शुद्धार्थ॥

एक बार राजा श्रेणिक ने विनय पूर्वक मस्तक झुकाकर श्रीमान् सन्मति जिनेन्द्र को नमस्कार किया तथा गौतम गणधर की वन्दना की। विनय से नतमस्तक होकर प्रश्न किये। (1) हे नाथ ! यह रत्नत्रय व्रत क्या है ? इसे किस प्रकार किया जाता है ? तथा इसका क्या फल है ? हे प्रभो ! इस व्रत की सम्यक् विधि से हम अनभिज्ञ हैं आप हम पर अनुकम्पा कर इसकी विधि बतायें। (2) अथानन्तर दिव्य गंभीर वाणी में गौतम स्वामी कहते हैं कि हे राजन् ! तुमने उत्तम प्रश्न किया, उसे मैं भगवान् की दिव्य ध्वनि अनुसार कहता हूँ तुम ध्यान पूर्वक सुनो। (3) सब द्वीपों के मध्य जम्बू वृक्ष से लक्षित एक लाख योजन विस्तार वाले जम्बूद्वीप में भरत वर्ष नाम का क्षेत्र है। (4) उसके पूर्व दिग्भाग में धार्मिक जनों से व्याप्त पूर्व विदेह नाम का दूसरा क्षेत्र है। (5) इस क्षेत्र में अनेक देशों से समन्वित पुर पत्तन से सुशोभित, पुष्कलावती नाम का अत्यन्त पवित्र देश है। (6) वहाँ सम्यक्त्व गुण से अलंकृत परम बुद्धिमान राजा वैश्रवण राज्य करता था। उसने पूर्व में यह रत्नत्रय नाम का व्रत किया। (7) उस व्रत विधान के फलस्वरूप उन्होंने तीर्थंकर कुल नामा सातिशय प्रशस्त पुण्य प्रकृति का बंध किया तथा आयु के अंत में वह राजा समाधिपूर्वक मरण करके स्वर्ग में अहमिन्द्र हुआ। (8) अथानन्तर भरत क्षेत्र के मनोहर बंग देश में मिथुलाक्षापुरी (मिथिलापुरी) नामा सुन्दर नगरी है। वहाँ कुम्भ नाम का राजा राज्य करता था उसकी सभी कलाओं में दक्ष प्रभावती नाम की रानी थी। सो वे अहमिन्द्र आयु के अंत में च्युत होकर प्रभावती माता के गर्भ में अवतरित हुए तथा रत्नत्रय व्रत के प्रभाव से मल्लिनाथ जिनेश्वर के नाम से ख्यात हुये। (9) (10) पूर्व पुण्य के योग से वे पंचकल्याणक के नायक हुए ऐसा जानकर सभी बुद्धिमानों को यह रत्नत्रय व्रत विधान अवश्य करना चाहिए। (11) **अब इस व्रत विधान की**

पूजा विधि को कहते हैं–सर्वप्रथम देह शुद्धिपूर्वक अर्हंत् के एक हजार आठ नाम वाले जिनसहस्रनाम का पाठ करके सकलीकरण क्रिया करना चाहिए। (12) फिर वेदी और मण्डप की भव्यतम शोभा करके प्रथमतया अरहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु इन पंच धर्म नायकों (पंच परमेष्ठी) की पूजा करना चाहिए। (13) तदनन्तर आगमोक्त विधि से गुरु आज्ञा लेकर प्रसन्नचित्त हो भक्तिपूर्वक स्वस्तिक पर रत्नत्रय के बिम्ब स्वरूप चौबीस तीर्थंकर के जिनबिम्ब की स्थापना करना चाहिए। (14) उसके आगे विधिपूर्वक सम्यक् तीन यंत्र (रत्नत्रय यंत्र) की स्थापना कर यंत्र–मंत्र की पूजा करें। (15) स्वस्तिकों से सुन्दर कोष्ठों की रचना कर, अपनी शक्ति और भक्ति अनुसार शिवपद को देने वाले व्रत का उद्यापन करना चाहिए। (16) विधान में नित्य प्रथम गुरु आज्ञा लेवें तत्पश्चात् पूजा प्रारम्भ करें आदि में त्रिशुद्धि पूर्वक जिनसहस्रनाम का पाठ करें फिर सकलीकरण करें। पश्चात् अनुक्रम से श्री अरिहंत जिनदेव, सिद्ध, कलिकुण्डादि श्रुत (जिनवाणी, सरस्वती) की अर्चा पूर्वक गुरु पूजा करके सम्यग्दर्शन–ज्ञान–चारित्र की अर्चना करना चाहिए। (17) इस व्रत विधान की उद्यापन विधि में सम्यक् विधि से मण्डप वेदी स्वस्तिक (मंडलजी) को सुसज्जित करना आद्य कर्त्तव्य है। अभिषेक पाठ को पढ़ते हुए विधिपूर्वक पंचामृत (जल, इक्षु, आम आदि रस, घी, दूध, दही व सर्वौषधि) अभिषेक भक्ति पूर्वक करना चाहिए। झंडारोहण के बाद विधानाचार्य को पान, वस्त्र आदि दान देकर प्रसन्न करना चाहिए। तत्पश्चात् विविध सुन्दर तोरण द्वार बनाकर, अनेक वाद्यों की मंगल ध्वनि पूर्वक अंकुरारोपण विधि करना चाहिए। (18) विधान में उद्यापन के इस अवसर पर मुनि, आर्यिका, श्रावक–श्राविका रूप चतुर्विध संघ को आहार, अभय, औषध व शास्त्र दान चार प्रकार का दान देकर स्तुति पूर्वक निर्ग्रन्थ गुरु का आशीर्वाद प्राप्त करें तथा मंगलमय गीत, नृत्य, स्तुति, हवन जयघोष, शोभायात्रा आदि प्रभावनापूर्वक उद्यापन का समापन करें। इस व्रत विधान की विधि वर्तमान जिनशासन नायक भगवान् महावीर स्वामी के प्रमुख श्रोता राजा श्रेणिक के प्रश्न किये जाने पर गणधर भगवान् ने बताई थी।

***

श्री रत्नत्रय समुच्चय पूजा

(शंभु छन्द)

हे भव्य ! सभी आओ-आओ, रत्नत्रय का शुभ ध्यान धरो।
शुभ सम्यग्दर्शन ज्ञान-चरित, इनको धारो कल्याण करो॥
तीनों मिल मोक्ष सुपथ बनते, इनका आह्वानन करते हैं।
इन आत्मगुणों का श्रद्धा से, शत-शत अभिनंदन करते हैं॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शंभु छंद)

क्षीरोदधि सम निर्मल जल भर, यह रत्नकलश ले आये हैं।
मम जन्म-जरा-मृत नाश हेतु, भावों से जल भर लाये हैं॥
सम्यग्दर्शन औ ज्ञान-चरित, ये आतम गुण कहलाते हैं।
रत्नत्रय धारण करने हित, हम इनकी भक्ति रचाते हैं॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

माया के बंधन में फँसकर, निज आतम को भरमाया है।
संसार तपन से बचने को, प्रभु चंदन चरण चढ़ाया है॥ सम्यग्दर्शन...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

यह मधुर सुगंधित अक्षत के, मनहारे पुंज समर्पित हों।
हम अक्षय पद को पा जायें, क्षत-विक्षत भाव विसर्जित हो॥ सम्यग्दर्शन...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

हम कमल-केतकी-बकुल-कुसुम, सुन्दर मनहारे पुष्प लिए।
श्रद्धा से आज चढ़ाते हैं, संग मन पंकज के पुष्प लिए॥ सम्यग्दर्शन...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥4॥

षट्रस भूषित बरफी आदिक, शुचि नेवज मिष्ट चढ़ाते हैं।
हम अपनी क्षुधा नशाने को, हे नाथ ! शरण में आते हैं ॥
सम्यग्दर्शन औ ज्ञान-चरित, ये आतम गुण कहलाते हैं।
रत्नत्रय धारण करने हित, हम इनकी भक्ति रचाते हैं॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

जग तमहारी घृत रत्नों के, हम सुंदर दीपक लाते हैं।
रत्नत्रय दीपक से जिनवर, निज आतम दीप जलाते हैं॥ सम्यग्दर्शन...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥6॥

वह धूप दशांगी लाये हम, जो मन को प्रमुदित करती है।
निज ज्ञानप्रभा प्रगटायेंगे, जो आतम कल्मष हरती है॥ सम्यग्दर्शन...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥7॥

अंगूर-आम-अमरूद-पनस, वसु फल के थाल समर्पित हो।
हम मोक्ष महाफल को पायें, सब भौतिक चाह विसर्जित हो॥ सम्यग्दर्शन...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥8॥

जल-चंदन आदिक अष्ट द्रव्य, उनका इक थाल बनाया है।
अविचल अनर्घ पद पायेंगे, यह उत्तम भाव बनाया है॥ सम्यग्दर्शन...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

(गीता छंद)

त्रय रत्न को त्रय कुंभ से शुभ शांति धारा जो करें।
शत पुष्प ले कर पुष्प में जो दिव्य पुष्पांजलि करें॥
फिर धर क्षमादिक धर्म को शिवराज वे पा जायेंगे।
त्रय गुप्ति का व्रत पूर्णकर भव दुःख कभी ना पायेंगे॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं सम्यक्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा : रत्नत्रय की भाव से, करें भक्ति त्रयकाल।
रत्नत्रय का लाभ ले, पढ़ें सदा जयमाल॥

(शंभु छंद)

श्री मोक्षमार्ग का आद्य चरण, सम्यग्दर्शन कहलाता है।
सम्यग्दर्शन के होने पर, भव का बंधन कट जाता है॥
मिथ्यात्व तिमिर के हटने पर, श्रद्धा का सूर्य निकलता है।
इस सूर्य किरण से भव्यों का, सम्यक्त्व बीज तब फलता है॥1॥

सम्यग्दर्शन के साथ ज्ञान, सम्यक्त्व ज्ञान कहलाता है।
जो केवलज्ञान दिवाकर का, इक मूलस्रोत कहलाता है॥
जब ज्ञान सुसम्यक् होता है, तब सत् आचरण सुहाता है।
निज मोहकर्म विगलित होते, शिवसुख पथ हमें लुभाता है॥2॥

मुनिपद बिन मुक्ति नहीं मिलती, चाहे तीर्थंकर क्यों ना हो।
व्रत बिन वसुकर्म नहीं नशते, चाहे प्रलयंकर क्यों ना हो॥
सम्यग्दर्शन और ज्ञान-चरित, मिल मुक्ति सौख्य दिलवाते हैं।
रत्नत्रय धारण करके ही, अरिहंत सिद्ध बन जाते हैं॥3॥

रत्नत्रय पालन करने हम, जिन-आगम-गुरु को ध्याते हैं।
इनकी शरणा पाने वाले, भवसागर से तिर जाते हैं॥
इस कारण मोक्ष महापथ की, शिवरूचि से चर्चा करते हैं।
हम 'गुप्ति' व्रतों के पालन हित रत्नत्रय अर्चा करते हैं॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जिन भक्त निर्मल भाव से यह 'रत्नत्रय पूजन' करें।
त्रैलोक्य सुख पावें सदा सुर-नर उसे वंदन करें॥
फिर धर क्षमादिक धर्म को शिवराज वे पा जायेंगे।
त्रय 'गुप्ति' व्रत को धारकर भवदुःख कभी ना पायेंगे॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

श्री सम्यग्दर्शन पूजा

(शंभु छन्द)

भविजन आओ जिन गुण गाओ, सम्यग्दर्शन का ध्यान धरो।
रत्नत्रय को पाने हेतू, सत्श्रद्धा का आह्वान करो॥
सम्यग्दर्शन जो पाते हैं, वो भवसागर तिर जाते हैं।
भवसागर का शोषण करके, गुण गागर भर ले जाते हैं॥
इस कारण सम्यग्दर्शन का, भावों से वंदन करते हैं।
मन पंकज सहित सुमन लेकर, नित शत अभिनंदन करते हैं॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शन ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शन ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शन ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(हरिगीता छंद)

निर्मल हृदय निर्मल करण[1] से जल यहाँ अर्पण करें।
हम जन्म-मृत्यु विनाश हेतू विनय से अर्चन करें॥
जो मोक्षपथ के प्रथम पद की भाव से अर्चन करें।
वे भवभ्रमण से छूटकर निज आत्म में रंजन करें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शनाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

केसर सुगन्धित मलय चंदन आज हम अर्पण करें।
संसार ताप विनाशकर निज आत्म का तर्पण करें॥ जो मोक्ष.....॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शनाय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

उज्ज्वल अखंडित अक्षतों को आज हम अर्पित करें।
अक्षय अखंडित सहज मंडित आत्मगुण अर्जित करें॥ जो मोक्ष.....॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शनाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

चम्पा-चमेली-मालती मचकुन्द सुन्दर सुमन ले।
निज काम रिपु[2] का नाश करने गुण सुमन अर्पण करें॥ जो मोक्ष.....॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शनाय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।4॥

---

1. परिणाम, 2. शत्रु।

बरफी इमरती थाल भर-भर लाय निर्मल भाव से।
पापिन क्षुधा के नाश हित हम भक्ति करते चाव से॥
जो मोक्षपथ के प्रथम पद की भाव से अर्चन करें।
वे भवभ्रमण से छूटकर निज आत्म में रंजन करें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शनाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥5॥

छाया तिमिर घन मोह का नहिं आत्म अवलोकन किया।
स्वर्णाभ घृत दीपक जला अब मोह तम खण्डन किया॥ जो मोक्ष.....॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शनाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥6॥

आठों करम की श्रृंखलायें रोकती जग जाल में।
हम धूप पावक में चढ़ायें ना फसें जंजाल में॥ जो मोक्ष.....॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शनाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥7॥

है मोक्षफल सुन्दर महाफल और सब निस्सार है।
जो नित्य नूतन फल चढ़ावे वो जगत से पार है॥ जो मोक्ष.....॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शनाय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥8॥

प्रभु दर्श से सब पाप नशते पार ना हो हर्ष का।
ऐसे अमल परिणाम ही हैं नाम सम्यग्दर्श का॥ जो मोक्ष.....॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शनाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥9॥

(गीता छंद)

त्रय रत्न को त्रय कुंभ से शुभ शांति धारा जो करें।
शत पुष्प ले कर पुष्प में जो दिव्य पुष्पांजलि करें॥
फिर धर क्षमादिक धर्म को शिवराज वे पा जायेंगे।
त्रय गुप्ति का व्रत पूर्णकर भव दुःख कभी ना पायेंगे॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

निःशंकितादि आठ अंग *(अडिल्ल छंद)*

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

देव शास्त्र गुरु पर श्रद्धा शंका रहित।
फल देती है स्वर्ग मोक्ष वो सुख सहित॥

ऐसे सम्यग्दर्शन को ध्याऊँ यहाँ।
तोड़ अखिल जग फन्द वरूँ जिन सुख महा॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निःशंकितांगयुक्त सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कांक्षा रहित जिनागम गुरु को ध्याइये।
बिन माँगे मनवांछित फल पा जाइये॥ ऐसे...॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निःकांक्षितांगयुक्त सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि मुद्रा को देख घृणा मत कीजिये।
निर्विचिकित्सा धार सुधारस पीजिये॥ ऐसे...॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्विचिकित्सांगयुक्त सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मूढ़भाव को त्याग धरम पहिचान लो।
ज्ञान स्वयं में धार निजातम जान लो॥ ऐसे...॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अमूढ़दृष्ट्यंगयुक्त सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोष छिपा धर्मी के गुण औषध भरे।
उपगूहन गुणधारी अवगुण को हरे॥ ऐसे...॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री उपगूहनांगयुक्त सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म ध्यान से विचलित कोई हो रहा।
उसे धर्म में थिर करना सम्यक् कहा॥ ऐसे...॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्थितिकरणांगयुक्त सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मी धर्म प्रति निश्छल मैत्री करे।
वत्सल अंग धरे वो सब कल्मष हरे॥ ऐसे...॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वात्सल्यांगयुक्त सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जप तप तीरथ से कर आत्म प्रभावना।
गुरु सेवा पूजा से धर्म प्रभावना॥ ऐसे...॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रभावनांगयुक्त सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (अडिल्ल छंद)

आठ दोष तज आठ अंग भवि पालना।
मन वच तन से अंग हीनता टालना॥

विकृत मंत्र निरर्थक हो यह मानिये।
मिथ्या रुचि भव सेतु न हो दृढ़ जानिये॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निःशंकितादि अष्टांग संयुक्त सम्यग्दर्शनाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (गीता छंद)

सब दोष वा दुर्गुण रहित, सद्गुण सहित सम्यक्त्व है।
निज आत्म सिद्धी का, प्रथम सोपान भी सम्यक्त्व है॥
उसके समस्त प्रभेद को, पूर्णार्घ अर्पण हम करें॥
हे नाथ ! उसका दो सुफल, हम तीन रत्नों को वरें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शंकादि पंचविंशति दोष रहित अष्ट गुण सहित अष्टांग सम्यग्दर्शनाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : रत्न कुंभ जल से भरें, करें सुखद जलधार।
समकित रत्न सुलाभ हित, अर्पें सुमन अपार॥

शांतये शांतिधारा.... दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा : गुणमाला सम्यक्त्व की, देती ज्ञान अपार।
मोक्ष महल के हेतु हम, आये प्रभु के द्वार॥

शेर छंद (तर्ज- हे दीनबंधु...)

सम्यक्त्व मोक्षमार्ग की पहली इकाई है।
सुरेन्द्र-इन्द्र-खगपति ने कीर्ति गाई है॥
आगम-गुरु-जिनेन्द्र पर श्रद्धान जो करें।
सम्यक्त्व धार आत्म का उत्थान वो करें॥1॥

ये आठ अंग आठ गुण से पूर्ण कहाता।
भव्यात्मा के कर्मशैल चूर्ण कराता॥
जिनदेव-श्रुत मुनीश पे संदेह ना करो।
चारित्र ज्ञान धार मुक्ति अंगना वरो॥2॥

निष्काम भक्ति से मिलेंगी सर्व सिद्धियाँ।
सेवा भी तीन रत्न की दिलाये ऋद्धियाँ।।
त्रय मूढ़ता तजो अमूढ़दृष्टि को वरो।
औरों के दोष देख के तुम उपवृहंण करो।।3।।

पथ भ्रष्ट जीव का करो तुम स्थितिकरण।
गो वत्स के समान होवे नेह का वरण।।
सद्भावना से होवेगी सच्ची प्रभावना।
अष्टांग पूर्ण दृष्टि पाऊँ ये ही कामना।।4।।

सम्यक्त्वी प्रथम नरक छोड़ अन्य ना जावें।
नारी पशु या भुवन त्रय का स्वर्ग ना पावें।।
दारिद्रता के कष्ट को वो पाये ना कभी।
कुलहीन अल्पमृत्यु को वो पाये ना कभी।।5।।

त्रेषठ शलाका पुरुष में वो जन्म पायेगा।
क्रम-क्रम से वो ही भव्य मुक्ति धाम जायेगा।।
अक्षय अनंत आत्मलीन सौख्य है जहाँ।
सिद्धात्मा अनंत नित विराजते यहाँ।।6।।

सम्यक्त्व युक्त आत्मा को शीश नवायें।
संसार भ्रमण नाश हेतू नाथ को ध्यायें।।
ऐसी अखण्ड सौख्यदायी दृष्टि वरेंगे।
त्रय 'गुप्ति' धार करके, कर्मकृष्टि करेंगे।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शनाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जिन भक्त निर्मल भाव से यह 'रत्नत्रय पूजन' करें।
त्रैलोक्य सुख पावें सदा सुर-नर उसे वंदन करें।।
फिर धर क्षमादिक धर्म को शिवराज वे पा जायेंगे।
त्रय 'गुप्ति' व्रत को धारकर भवदुःख कभी ना पायेंगे।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

श्री सम्यग्ज्ञान पूजा

(गीता छन्द)

शिवपुर महापथ के पथिक त्रयरत्न को धारण करें।
पाये परम दृग[1]-ज्ञान-व्रत वसुकर्म निरवारण करें॥
ऐसे सुसम्यक्ज्ञान का हम आज आह्वानन करें।
कैवल्य ज्योति प्रकाश हित निज आत्म में थापन करें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्ज्ञान ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्ज्ञान ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्ज्ञान ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

निज आत्म क्षालन के लिए हम स्वच्छ जलघट ला रहे।
निज कर्म दोष निवारने जिनवर शरण में आ रहे॥
अज्ञान तम से दुःखित हम त्रैलोक्य में भटके फिरे।
सद्ज्ञान की पूजा करें दुर्वार भवसिंधु तिरें॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्ज्ञानाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरी का शुभ्र चंदन देह दाहकता हरे।
चंदन प्रभु चरणन् चढ़ा हम आत्म पातकता हरे॥ अज्ञान तम.. ॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्ज्ञानाय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय निधी के लाभ हित हम आज अक्षत ला रहे।
हो ज्ञान-अक्षय सौख्य-अक्षय भाव अक्षत भा रहे॥ अज्ञान तम.. ॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्ज्ञानाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना तरह के पुष्प ले पुष्पांजलि अर्पण करें।
आत्मोत्थ आनंद लाभ हित हम स्वयं को अर्पण करें॥ अज्ञान....॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्ज्ञानाय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्रस मनोहर व्यंजनों से ज्ञान की अर्चा करें।
नाशें क्षुधा का रोग हम निज आत्म परिचर्या करें॥ अज्ञान....॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्ज्ञानाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1.सम्यग्दर्शन।

कैवल्य ज्योति प्रतीक दीपक तम हरे अज्ञान का।
ज्ञानावरण के नाश हित बस लक्ष्य हो सुज्ञान का।।
अज्ञान तम से दुःखित हम त्रैलोक्य में भटके फिरे।
सद्ज्ञान की पूजा करें दुर्वार भवसिंधु तिरें।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्ज्ञानाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध मनहर धूप को पावक जला सुरभित करे।
तव भक्ति काटे कर्म को सर्वात्म को प्रमुदित करे।। अज्ञान....।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्ज्ञानाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रसदार ताजे मिष्ठ फल से ज्ञान की अर्चा करें।
हम शिव सदन की भावना से ज्ञान की चर्चा करें।। अज्ञान....।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्ज्ञानाय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल-गंध-अक्षत-पुष्प आदिक अर्घ भरकर ला रहे।
मद मोह विषयादिक तजें हम ज्ञान महिमा गा रहे।। अज्ञान....।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्ज्ञानाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

त्रय रत्न को त्रय कुंभ से शुभ शांति धारा जो करें।
शत पुष्प ले कर पुष्प में जो दिव्य पुष्पांजलि करें।।
फिर धर क्षमादिक धर्म को शिवराज वे पा जायेंगे।
त्रय गुप्ति का व्रत पूर्णकर भव दुःख कभी ना पायेंगे।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

अष्टांग सम्यग्ज्ञान के अर्घ

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(काव्य छंद)

पठन ''काल'' हो योग्य, मन आनन्दित करता।
बोधि समाधि निधान, पाप तिमिर को हरता।।

अष्ट अंग युत ज्ञान, ज्ञान ज्योति प्रगटावे।
पूजा के शुभ भाव, ज्ञान सुधा बरसावें॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कालाचार युक्त सम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान विनय का भाव, ''विनयाचार'' कहाता।
ज्ञानी का सत्कार, सम्यग्ज्ञान कराता॥ अष्ट अंग...॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विनयाचार युक्त सम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्याग स्रोत ''उपधान'', त्याग वृत्ति प्रगटावें।
करें ग्रंथ आरंभ, गुरु कुछ त्याग करावें॥ अष्ट अंग...॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री उपधानाचार युक्त सम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आगम का ''बहुमान'', निर्मल ज्ञान बढ़ाता।
ज्ञानी गुरु का मान, निज का ज्ञान जगाता॥ अष्ट अंग...॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री बहुमानाचार युक्त सम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु से पाकर ज्ञान, उनको नहीं भुलाओ।
वरो ''अनिन्हव'' भाव, भेद ज्ञान विकसाओ॥ अष्ट अंग...॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनिन्हवाचार युक्त सम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुत के पद औ ''शब्द'', उन पर श्रद्धा करना।
उच्चारण कर शुद्ध, शुद्ध अर्थ को वरना॥ अष्ट अंग...॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शब्दशुद्धि युक्त सम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्थ पूर्ण है शब्द, इनका अर्थ समझ लो।
सारभूत का लाभ, नय प्रमाण से कर लो॥ अष्ट अंग...॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अर्थशुद्धि युक्त सम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शब्द अर्थ का ज्ञान, भविजन नित जो करता।
रत्नत्रय व्रत पाल, ''उभय शुद्धि'' को वरता॥ अष्ट अंग...॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री उभयशुद्धि युक्त सम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (काव्य छंद)

सम्यग्दर्शन साथ, सम्यक् श्रुत को धारो।
अष्टम वसुधा हेत, आठ दोष परिहारो।।
वर सत् ज्ञान अपार, निर्मल संयम पाओ।
ले पूजा के थाल, बहुश्रुत भक्ति रचाओ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अष्टांगसम्यग्ज्ञानाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

त्रय रत्न को त्रय कुंभ से शुभ शांति धारा जो करें।
शत पुष्प ले कर पुष्प में जो दिव्य पुष्पांजलि करें।।
फिर धर क्षमादिक धर्म को शिवराज वे पा जायेंगे।
त्रय गुप्ति का व्रत पूर्णकर भव दुःख कभी ना पायेंगे।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा : रत्नत्रय का दीप है, निर्मल सम्यज्ञान।
उसकी जयमाला पढूँ, पाऊँ केवलज्ञान।।

चौपाई छंद

जय-जय श्री जिन केवलज्ञानी, श्री जिनमुख भाषित जिनवाणी।
गणधर-मुनि मनपर्ययज्ञानी[1], महाश्रमण शुभ अवधिज्ञानी।।1।।

जय-जय सम्यक्ज्ञान निराला, पंचभेदयुत कहें कृपाला।
प्रथम ज्ञान मतिज्ञान कहाये, त्रय शत छत्तीस भेद बताये।।2।।

दूजा है श्रुतज्ञान महाना, द्वादशांगमय भेद बखाना।
अवधिज्ञान के भेद अनेकों, द्विविध मनःपर्यय को देखो।।3।।

1. मनःपर्ययज्ञानी।

क्षायिक केवलज्ञान कहाये, इसे केवली जिनवर पायें।
जब सम्यक्दर्शन होता है, ज्ञान तुरत सम्यक् होता है॥4॥

यह ही सच्चा दीप कहाये, दर्शन-व्रत में शुचिता लाये।
आठ अंगयुत इसको ध्याओ, श्रुत के पाँच नियम अपनाओ॥5॥

जिनवाणी को जब भी पढ़ना, अक्षर कम ज्यादा ना करना।
जैसा का तैसा ही पढ़ना, नहिं विपरीत व संशय करना॥6॥

इक मृग ने जिनशास्त्र सुना था, दूजे भव नरराज बना था।
वे बालि मुनिराज कहाये, श्रुतकेवलि हो जिनपद पाये॥7॥

वायुभूति ब्राह्मण अभिमानी, पायी महाश्रमण की वाणी।
आगे मुनि सुकुमाल कहाये, मुनि सर्वार्थसिद्धि को पायें॥8॥

शिवभूति मुनिराज हमारे, वे आगम को पढ़-पढ़ हारे।
धार त्रिगुप्ति ध्यान लगाया, बने केवली जिनपद पाया॥9॥

ग्वाले ने पायी जिनवाणी, मुनि को भेंट करे वो दानी।
कुन्दकुन्द मुनिराज बने वो, मुनि बन नाना शास्त्र रचे वो॥10॥

सम्यज्ञान रत्न को ध्यायें, भक्तिभाव से अर्घ चढ़ायें।
'गुप्ति' सूरि जयमाला गाये, केवलज्ञान सूर्य प्रगटाये॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्ज्ञानाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जिनभक्त निर्मल भाव से यह 'रत्नत्रय पूजन' करें।
त्रैलोक्य सुख पावें सदा सुर-नर उसे वंदन करें॥
फिर धर क्षमादिक धर्म को शिवराज वे पा जायेंगे।
त्रय 'गुप्ति' का व्रत पूर्ण कर भवदुःख कभी ना पायेंगे॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

श्री सम्यक्चारित्र पूजा

(पंच चामर छंद)

विशुद्ध त्याग वा चरित्र की करें जिनार्चना।
महान् त्याग के धनी मुनीश की सुवंदना।
अशेष पुष्प हाथ में लिए मुनीश आज मैं।
करूँ पुनीत थापना जिनेश दिव्य भाव से॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यक्चारित्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यक्चारित्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यक्चारित्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

पवित्र नीर कुंभ ले जिनेश को चढ़ा रहा।
जिनेश का स्वरूप भी सुभक्ति में बड़ा रहा॥
विशिष्ट त्याग में लगे मुनीश ही महान हैं।
चरित्र ही त्रिलोक में जहाज के समान है॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यक्चारित्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

समस्त ताप जो हरे उसी सुगंध को चढ़ा।
निजात्म ताप नाशने विमुक्ति मार्ग में बढ़ा॥ विशिष्ट....॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यक्चारित्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अखण्ड शालिपुंज भी अखंडभाव से चढ़े।
प्रचण्ड-चण्ड कर्म भी प्रखंड-खंड हो पड़े॥ विशिष्ट....॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यक्चारित्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुपुष्प के समूह जो गुलाब आदि नाम हैं।
चढ़े विशेष भक्ति से चरित्र तीर्थ धाम में॥ विशिष्ट....॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यक्चारित्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पुनीत वा सुनीत[1] जो वही मिठाइयाँ चढ़ीं।
यहाँ क्षुधा पिशाचिनी विमूढ़ लस्त हो पड़ी॥ विशिष्ट....॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यक्चारित्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. सुन्दर ढंग से लायी गयी।

प्रदीप्त दीप थाल से जिनारती उतारता।
जिनेन्द्र सूर्य पास में प्रमोह ध्वान्त हारता॥
विशिष्ट त्याग में लगे मुनीश ही महान हैं।
चरित्र ही त्रिलोक में जहाज के समान है॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यक्चारित्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

निजाष्टकर्म नाशने विशुद्ध धूप लायके।
खिरा सुयोग्य अग्नि में प्रयाग भाव पायके॥ विशिष्ट....॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यक्चारित्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बदाम आम संतरादि श्रीफलादि थाल ले।
सुधर्म सूर्य को चढ़ा सुभक्त भी निहाल है॥ विशिष्ट....॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यक्चारित्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश ! दिव्य अर्घ की मनोज्ञ थाल ला रहा।
अनर्घ सौख्य लाभ हो यही विचार ला रहा॥ विशिष्ट....॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यक्चारित्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

त्रय रत्न को त्रय कुंभ से शुभ शांति धारा जो करें।
शत पुष्प ले कर पुष्प में जो दिव्य पुष्पांजलि करें॥
फिर धर क्षमादिक धर्म को शिवराज वे पा जायेंगे।
त्रय गुप्ति का व्रत पूर्णकर भव दुःख कभी ना पायेंगे॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

तेरह प्रकार सम्यक्चारित्र के अर्घ

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(दोहा)

पूर्ण अहिंसा व्रत धरें सब हिंसा परिहार।
प्रथम महाव्रत है यही, पूजूँ मैं उर धार॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अहिंसा महाव्रतयुक्त सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्या वचनों को तजें, सत्य महाव्रत पाल।
सत्य महाव्रत धारने, पूजूँ मैं त्रयकाल।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सत्य महाव्रतयुक्त सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर अचौर्य व्रत पूर्णतम, मुनिवर मोह निवार।
उनके सम्यक् त्याग का, करता हूँ सत्कार।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अचौर्य महाव्रतयुक्त सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शील महाव्रत पालते, करते ब्रह्म विहार।
उन मुनियों को मैं भजूँ, करने व्रत स्वीकार।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ब्रह्मचर्य महाव्रतयुक्त सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन उपकरण के सिवा, रखे न परिग्रह लेश।
पंच महाव्रत धर श्रमण, नाशें कर्म अशेष।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अपरिग्रह महाव्रतयुक्त सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चलते ईर्या समिति से, जीव दया उर धार।
करूणावान मुनीश को, पूजूँ बारम्बार।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ईर्यासमितियुक्त सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हित-मित-प्रिय वच बोलते, भाषा समिति विचार।
मुख से वचनामृत झरें, करते धर्म प्रचार।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री भाषासमितियुक्त सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोष छियालिस टालते, अंतराय बत्तीस।
तन को वेतन रूप में, देते ग्रास मुनीश।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ऐषणासमितियुक्त सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपकरणों का जब करें, मुनि आदान-प्रदान।
चौथी समिति पालते, सर्व साधु भगवान।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री आदाननिक्षेपणसमितियुक्त सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मल मूत्रादिक त्याग में, रखते श्रमण विवेक।
ये समिति व्युत्सर्ग है, करें शास्त्र उल्लेख।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री व्युत्सर्गसमितियुक्त सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज मन को वश में करें, भाव शुभाशुभ टाल।
मनोगुप्ति धर श्रमण को, सदा झुकाऊँ भाल॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मनोगुप्तियुक्त सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचोगुप्ति पालन करें, तजें शुभाशुभ वैन[1]।
ऐसे श्रेष्ठ मुनीन्द्र को, पूजूँ मैं दिन रैन॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वचोगुप्तियुक्त सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काय गुप्ति जो पालते, रहे न तन आधीन।
उनकी पूजा में सदा, रहो भव्य तल्लीन॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कायगुप्तियुक्त सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (दोहा)

पाँच महाव्रत समिति पञ्च, गुप्ति त्रिविध प्रकार।
तेरह विध चारित्र ये, भजूँ त्रियोग सम्हार॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

त्रय रत्न को त्रय कुंभ से शुभ शांति धारा जो करें।
शत पुष्प ले कर पुष्प में जो दिव्य पुष्पांजलि करें॥
फिर धर क्षमादिक धर्म को शिवराज वे पा जायेंगे।
त्रय गुप्ति का व्रत पूर्णकर भव दुःख कभी ना पायेंगे॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा : **सम्यक् चारित के धनी, होते भव से पार।**
इनके गुण गण गान से, मिलता सौख्य अपार॥

चौपाई छंद

सम्यक् श्रद्धा जब जग जाये, ज्ञान चारित सम्यक् हो जाये।
मोक्षमहल की मुख्य इकाई, भवि को मुक्तिरमादिक दायी॥1॥

1. वचन।

यह जग सारा भूल-भुलैया, इसमें अपना कोई न भैया।
जग सारा स्वारथ का मेला, स्वार्थ निकलते जीव अकेला॥2॥

नाना भव के रिश्ते नाते, पुण्य उदय से साथ निभाते।
कर्म बली जग में भटकाता, कभी हँसाता कभी रुलाता॥3॥

षट्कर्मों की कला सिखायें, युगनेता आदीश कहाये।
अन्तराय उनको जब आया, छह महिने भोजन ना पाया॥4॥

कुष्ठी पति मैना ने पाया, समता से उसको अपनाया।
सिद्धचक्र से कुष्ठ मिटाया, फिर भी पति सुख तुरत न पाया॥5॥

जनक सुता रघुवर की नारी, वन-वन भटकी वो बेचारी।
अशुभ कर्म उदयागत आये, प्राणी को दर-दर भटकाये॥6॥

गिरधर जो गोवर्धन धारें, बाण लगा परलोक सिधारे।
कर्म किसी को भी ना छोड़े, योगी इनसे नाता तोड़े॥7॥

प्रशम आदि भावों को धारें, विषय वासना को परिहारें।
यथायोग्य संयम अपनायें, ध्यान लगा निज कर्म नशायें॥8॥

जो सम्यक्चारित अपनाये, मोक्षमहल को वो ही पाये।
कर्मकाष्ठ क्षण में विनशाये, परमानंद परमसुख पाये॥9॥

हम भी उत्तम संयम पायें, 'गुप्ति' धरें शिवपुर में जायें।
जयमाला प्रभुवर की गायें, भक्तिभाव से अर्घ चढ़ायें॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यक्चारित्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

जिनभक्त निर्मल भाव से यह 'रत्नत्रय पूजन' करें।
त्रैलोक्य सुख पावें सदा सुर-नर उसे वंदन करें॥
फिर धर क्षमादिक् धर्म को शिवराज वे पा जायेंगे।
त्रय 'गुप्ति' का व्रत पूर्णकर भवदुःख कभी ना पायेंगे॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

वृहद् जयमाला

दोहा : रत्नत्रय सन्मार्ग पर, कर श्रद्धा सत्ज्ञान।
तन्मय निर्मल आचरण, करे आत्म उत्थान॥

(शंभु छंद)

जय-जय श्री रत्नत्रय पथ वा, जय-जय रत्नत्रय धारी की।
जय पंच परम परमेष्ठी की, जय मोक्ष महल अधिकारी की॥
इस रत्नत्रय से आत्म दीप, प्रगटाने के शुचि भाव किये।
अतएव सकल जगफन्दों के, संकल्प विकल्प अभाव किये॥1॥

सम्यग्दर्शन और ज्ञान चरण, ये तीन रत्न उपकारी हैं।
इनके शरणागत प्राणी के, छूटे कल्मष सब भारी हैं॥
इस सम्यक् निधि को जो भविजन, यदि एक बार भी पाते हैं।
वे अर्द्ध परावर्तन[1] में ही, निश्चय शाश्वत सुख पाते हैं॥2॥

जो इकपल भी शुचिदर्शन[2] का, निज दीप हृदय में प्रगटायें।
वह क्षुद्र पशु तन पाकर भी, सुर गण द्वारा पूजा जाये॥
दर्शन से भ्रष्ट पतित प्राणी, निर्वाण बोधि को ना पाता।
तपभ्रष्ट पुनः तप सिद्ध बने, सम्यक्त्व हीन ना बन पाता॥3॥

सर्वज्ञ देव उनकी वाणी, निर्ग्रन्थ गुरु तद् अनुगामी।
उन पर श्रद्धान अटल रखकर, भविजन बन जाते शिवगामी॥
सम्यक् रुचि के पच्चीस दोष, इनको त्यागें दृढ़ श्रद्धानी।
गुण आठ अंग से शोभित हो, तत्क्षण बनते सम्यक्ज्ञानी॥4॥

सद् ज्ञानप्रभा से दीप्त जीव, अष्टांग युक्त श्रुत अभ्यासे।
नहि हीनाधिक तत्त्वानुरूप, अविरुद्ध निशंकित श्रुत भाषें॥
अनगिन अनंत भव का तप भी, प्रज्ञा बिन जग में भटकाये।
सद्ज्ञान बिना वह खोटा तप, नाना योनी में अटकाये॥5॥

1. अर्द्ध पुद्गल परावर्तन, 2. सम्यक्दर्शन।

नाना नय भंग मयी आरे, सद्ज्ञान चक्र को तीक्ष्ण करें।
दुर्नय दुर्मत दुर्भंगवाद, जिन सन्मुख तड़-तड़ टूट पड़े॥
स्याद्वाद अमोघ सुदृढ़ लांछन, इस अनेकांत मत में शोभे।
वादीभकेसरी आदिक् को, जिसका चिंतन पलपल लोभे॥6॥

नय निश्चय वा व्यवहार बीच, निर्मल जिन श्रुत सरिता बहती।
इसमें तिर भवि वह धाम वरें, जिस थल में शिव वनिता रहती॥
अज्ञानी सम्यक् ज्ञान बिना, मिथ्या तप कर दुःख पाते हैं।
पर ज्ञानी मुनि त्रय गुप्तिधार, क्षण में वसु कर्म नशाते हैं॥7॥

सम्यक् ज्ञानी श्रद्धानी जो, अविरत सम्यक्त्वी कहलाये।
नारक पशु देव मनुज भव में, अविरत हैं आगम बतलाये॥
जो आठ कषायें क्षय उपशम, कर देशव्रती बन जाते हैं।
वे श्रावक निर्मल व्रत धारी, सोलह स्वर्गों तक जाते हैं॥8॥

पुण्यात्म मनुज तिर्यंच जीव, अणुव्रत धारण कर पाते हैं।
इनके अत्यन्त विशुद्ध भाव, सुरपति को भी ललचाते हैं॥
पाँचों हिंसा का पूर्ण त्याग, निश्चय से मुनियों के होवे।
छठवें से चौदह गुणस्थान, मुनियों के क्रम-क्रम से होवे॥9॥

इस विध रत्नत्रय पूर्ण साध, यति पति शिव सदन निवास करें।
वंदन कीर्त्तन कर अर्घ चढ़ा, हम उनके सन्निध वास करें॥
रत्नत्रय धारक तीर्थंकर, अरहंत सिद्ध आचार्य श्रमण।
उनकी अक्षय गुणनिधियों में, करता भव्यों का चित्त रमण॥10॥

रत्नत्रय भवदधि में सेतू[1], दुर्गति का भ्रमण मिटाता है।
त्रय रोग विघ्न सब संकट हर, दिव आत्म सुखों का दाता है॥
बुद्धि विहीन प्रज्ञाधर हो, निर्धन नव निधियाँ चक्र वरें।
फिर धर्म चक्र धर तीर्थद् हो, जिनकी सेवा सुर शक्र करें॥11॥

1. पुल।

त्रय रत्न पुंज प्रगटाने के, उत्कर्ष भाव मन में आये।
इस कारण नृत्य गीत लय में, त्रय गुण की महिमा हम गायें॥
जय नादों से जिनमत यश को, तीनों लोकों में गुंजायें।
कर निर्मल तप जिन सूत्रों से, पतितों को शिवपथ में लायें॥12॥
इन त्रय रत्नों की पूजन से, हम रत्नत्रय पथ अपनायें।
इस मोक्ष मार्ग पर चलकर हम, शिवरानी के वर बन जायें॥
त्रय गुप्ति साध धर शुक्लध्यान, निज कर्म पिंड को विनशायें।
यह 'गुप्तिनंदी' शुद्धात्म होय, लोकाग्र क्षेत्र में बस जाये॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यक् रत्नत्रयाय तद्वंत पंच परमेष्ठिने जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जिनभक्त निर्मल भाव से यह 'रत्नत्रय' पूजन करें।
त्रैलोक्य सुख पा जाये वो सुर नर उन्हें वंदन करें॥
फिर धर क्षमादिक धर्म को शिवराज वे पा जायेंगे।
त्रय 'गुप्ति' का व्रत पूर्ण कर भव दुःख कभी ना पायेंगे॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

प्रशस्ति

(नरेन्द्र छंद)

आदिनाथ से सन्मति जिन तक, सब जिनवर को वंदन है।
वर्द्धमान जिन शासन नायक, हरते भव का क्रंदन हैं॥
अर्हत् सिद्ध सूरि पाठक वा, सर्व श्रमण को नमन करें।
इनके गुण आराधन से हम, मोक्ष महल में गमन करें॥1॥

वृषभसेन आदिक चौदह सौ, बावन गणधर को ध्यावें।
जिनवाणी की अर्चा कर हम, श्रुत सागर में रम जावें॥
मूलसंघ की सूर्यावलि[1] में, कुन्द-कुन्द जग सिद्ध हुए।
उनके अनुगामी गणनायक, श्रुत लेखक तप सिद्ध हुए॥2॥

आदि सिन्धु आचार्य महाना, इस अक्षय क्रम में आवें।
वे अपने तप बल की महिमा, मुख्य शिष्य में विकसावें॥
श्री महावीर कीर्ति सूरि ने, उनसे संयम को धारा।
जिनका निर्मल मंत्र तपोबल, लोक सिद्ध देवों द्वारा॥3॥

इनके शिष्य कुन्थु ऋषिनायक, जिनके श्रमण शताधिक हैं।
वे मेरे मुनि दीक्षा दाता, करुणाधर धर्माधिप हैं॥
पच्चिस सौ सत्रह वीराब्दे[2], रोहतक में मुनि दीक्षा दी।
गुरु आचार्य कनकनंदी ने, जिन आगम की शिक्षा दी॥4॥

पच्चिस सौ सतबिस वीराब्दे[3], मध्यदेश इन्दौर तिलक।
धनतेरस को सूरी पद[4] का, गुरुवर ने भेजा पत्रक॥
निजानंद शांती सीमंधर, गोम्मट्गिरी बहु ऋषि आयें।
मुनि कविन्द्र कुलपुत्रनंदी, औ क्षमा[5] व आस्था[6] हर्षायें॥5॥

---

1. आचार्य परम्परा, 2. 22-7-1991 ईस्वी सत्, 3. ईस्वी संवत्-2000, 4. आचार्य पद, 5. आर्यिका क्षमाश्री, 6. आर्यिका आस्थाश्री।

पच्चिस सौ अठबिस वीराब्दे[1], रवि पुष्यामृत श्रुत पंचम।
मंगल ध्वनि में यति श्रावक मिल, सबने दिया यतीश्वर धर्म॥
वीर मुक्ति संवत पच्चिस सौ, चौबिस पंचम माघ सुदी[2]।
रत्नत्रय सुविधान सृजूँ मैं, प्रज्ञा जागी पुण्यवती॥6॥

तभी वृहद् गणधर मंडल के, सम्पादन का पुण्य मिला।
गणिनी राजश्री आर्या से, गणधर पूजा पद्म खिला॥
बड़नगरी इन्दौरादिक में, इसकी हुई महा अर्चा।
जिसके अतिशय महिमा फल की, सर्व लोक में है चर्चा॥7॥

वीर वर्ष पच्चिस सौ अठबिस, माघ सुदी पंचम आयी[3]।
रत्नत्रय पूजा पूरी कर, मेरे मन खुशियाँ छायीं॥
गणिनी राजश्री माता ने, सम्पादन अनुरूप किया।
छन्द शास्त्र रस के पोषण से, भक्ति काव्य का रूप दिया॥8॥

मुनि कवीन्द्रनंदी ने इसके, संशोधन में योग दिया।
आर्या क्षमा व आस्था ने भी, लेखन में सहयोग दिया॥
सब यति अम्बा के सुयोग से, इस विधान को पूर्ण करा।
अक्षय निर्मल श्रुत गंगा से, अपना आतम कुंभ भरा॥9॥

इस पूजा के फल से/पूजक, रत्नत्रय पा पूज्य बने।
इह पर लौकिक सब निधियाँ पा, तीर्थंकर पद योग्य बने॥
अल्प बुद्धि मैं आगम विद् ना, किन्तु भक्तिमय काव्य लिखा।
इस पूजा फल से रत्नत्रय, होवे मेरा आत्म सखा॥10॥

दोहा- यह विधान रचना करी, आगम युत सब जान।
इसकी महिमा अगम है, सुख निधियों की खान॥
जब तक रवि शशि लोक में, होता रहे विधान।
'गुप्तिनंदी' की भूल को, शोध पढ़ें विद्वान॥

1. 22-5-2001 ईस्वी संवत्, 2. 1-2-1998 ईस्वीं संवत् (सागवाड़ा, राजस्थान)

आरती

1. (तर्ज : मन डोले मेरा तन डोले...)

आरती कर लो रत्नत्रय की, सब पाओ मोक्ष महान् रे।
हम आरती गायें दीपक ले।

रत्नत्रय निधी के स्वामी हो तीर्थंकर पद दानी।
मोह तिमिर को हरने वाले नव लब्धि के खानी- हो प्रभु जी नव-2
केवलज्ञानी, अर्न्तध्यानी, सम्यग्दर्शन दातार रे॥ हम आरती...।

सम्यग्ज्ञान ज्ञानधर यति की मनहर भक्ति रचायें।
उनकी केवलज्ञान ज्योति से प्रज्ञादीप जलायें- हो प्रभु जी प्रज्ञा-2
जिनगुण ध्यायें, आरती गायें, ले मंगल वाद्य अपार रे॥ हम आरती...।

सम्यक् संयम तप व्रत गुण को श्रद्धा से अपनायें।
'गुप्तिनंदी' रत्नत्रय पाकर भवसागर तिर जाये- हो प्रभु जी भव-2
शिवराह चलें, शिवराज करें, हम पायें शिवपुर द्वार रे॥ हम आरती...।

2. (तर्ज : माईन-माईन...)

रत्नत्रय की आरती करने, हम सब मिलकर आये।
दर्शन ज्ञान चरण के द्वारा, मोक्ष महल पा जायें॥ भगवन होऽऽ-2

वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, हो प्रभु केवलज्ञानी।
भव्यों को सन्मार्ग दिखाते, समोशरण के स्वामी॥
ज्ञाता दृष्टा सिद्ध प्रभु की, आरती हम करते हैं।
जिनगुण के अनुरागी बनकर, इनके गुण यजते हैं॥ भगवन होऽऽ-2

मोक्ष महल की पहली सीढ़ी, सम्यग्दर्शन धारें।
अष्ट अंग युत इनसे अपने, दुःख दोष परिहारें॥
देव-गुरु-आगम की भक्ति, भव बंधन छुड़वाये।
इनकी शरणा पाकर हम सब, क्षायिक पद पा जायें॥ भगवन होऽऽ-2

ज्ञान बिना इस जग में हमने, गोते खूब लगायें।
जगमग दीपों की थाली ले, ज्ञान गीत हम गायें॥
स्वपर प्रकाशी दीपक लेकर, केवल ज्योति जलायें।
द्वादशांग की आरति करके, भवसागर तिर जायें॥ भगवन होऽऽ-2
राग द्वेष को दूर भगाने, संयम धर को ध्यायें।
तेरह विध संयम को पाले, आतम गुण प्रगटायें॥
नर तन रतन अमोल मिला है, इसे न व्यर्थ गंवाये।
'राजश्री' चरणों में आकर, रत्नत्रय निधि पायें॥ भगवन होऽऽ-2

आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव

(तर्ज : इंजन की सीटी में...)

सगला चालो रे भाया मंदिर होले होले,
गुरुवर की भक्ति में म्हारो-मन डोले-2

बाल ब्रह्मचारी हैं गुरुवर, सौम्यमूर्ति के धारी।
इनके दर्शन करने आवे, मिल के सब नर-नारी॥ सगला.....
बाल वय में दीक्षा धारी, वरने मुक्ती नारी।
सकल परिग्रह त्याग बने, जो वेष दिगम्बर धारी॥ सगला.....
ज्ञान-ध्यान में रत जो रहते, परिषह को भी सहते।
कर्म विजेता बनने को जो, उपसर्गों को सहते॥ सगला.....
बाल-युवा इनके मन भावें, शिक्षा इनसे पावें।
धर्मनीति की शिक्षा देकर, जन-मन को हर्षावे॥ सगला.....
भक्तियोग के रस में रमते, औरों को रमवाते।
भौतिक रस के दीवानों को, आतमरस पिलवाते॥ सगला.....
नहीं किसी से पक्षपात है, समता रस के धारी।
'क्षमा' करो सब दोष हमारे, आये शरण तिहारी॥ सगला.....